बैगन के प्रमुख रोग एवं प्रबंधन

डा0 आर0पी0 सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र, चौकमाफी, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

फोमोप्सिस झुलसा एवं फोमोप्सिस फल सड़न:

पौधों की पत्तियों के निचली सतह पर गोलाकार, हल्के भूरे धब्बे दिखाई पड़ते हैं, बीच का हिस्सा हल्के रंग का होता है । पुराने धब्बे के ऊपर छोटे-छोटे काले धब्बे दिखाई देते हैं । तने की गांठों के पास भुरी धँसी हुई सूखी सडन देखने को मिलती है । पुराने फलों के ऊपर हल्के भूरे धंसे हुए धब्बे बनते हैं प्रभावित फल सड़ने लगता है ।

समेंकित प्रबंधन

- **फफूंद प्रभावित सड़े-गले पौधों के अवशेषों में मिटटी में पलते बढ़ते हैं । वैसे मुख्यतः यह बीज जनित रोग होता है । नर्सरी में मैन्कोजेब 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से साप्ताहिक छिड़काव करें ।**
- **ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें ।**
- **बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम/किग्रा बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम 50%WP या विनोमाईल से करें , या थिरम+कार्बेन्डाजिम (2:1) ग्राम/किग्रा. से करें । 3-4 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं जिसमें टमाटर, मिर्च, बैगन आदि की फसल न लगायें,**
- **रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त सम्राट, फ्लोरिडा मार्केट,** नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा कांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक **आदि उगाये ।**
- **खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखयी देने पर प्रथम छिड़काव कापर आक्सीक्लोराइड 50% WP की 3 ग्राम /ली पानी की दर से तथा दूसरा छिड़काव कार्बेन्डाजिम 50% WP की 1 ग्राम/ली पानी की दर से करना चाहिए । या जिनेब 75% WP (डाईथेन जेड -78) या मैन्कोजेब 75% WP 2.5 ग्राम/ली पानी की दर से छिड़काव करें ।**

बैगन का छोटी पत्ती रोग (लिटिल लीफ):

यह बैंगन का एक फाईटोप्लाजमा जनित विनाशकारी रोग है जिसे 'लीफ होपर' नामक कीट से फैलता हैं।

इसमें रोगी पौधा बौना रह जाता हैं। तथा पत्तियां आकार में छोटी रह जाती हैं। प्राय: रोगी पौधों पर फूल नहीं बनते हैं। और पौधा झाड़ीनुमा हो जाता हैं। यदि इन पौधों पर फल भी लग जाते हैं तो वे अत्यंत कठोर होते हैं।

समेंकित प्रबंधन

- ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोग ग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें ।
- रोग रोधी/सहनशील किस्में जैसे - पूसा पर्पिल क्लस्टर, पूसा पर्पल राउंड, पूसा पर्पल लांग, कटराइन सैल 212 - 1, सैल 252-1-1, सैल 252-2-1, पन्त ऋतुराज, बी.बी.-7, एच.-8, बी.डब्लू.आर.-12 उगाये। पेड़ी फसल ना लेवे।
- पौधों को रोपाई से पूर्व पौध उपचार आधे मिनट तक टेट्रासाइक्लिन के घोल में (1 ग्राम/10 ली पानी) या कार्बोसल्फान 25% EC के 0.2% के घोल में 20-25 मिनट तक उपचारित करके ही लगायें ।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें, टेट्रासाइक्लिन की आधी ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें । इस रोग के प्रसार को रोकने के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 SL 3 मिली/10 ली पानी या डाईमेंथोएट 30 EC 1.5 मिली/ली पानी या मैलाथियान 50 EC 2 मिली/ली पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें ।

बैगन का श्यामव्रण या फल विगलन रोग:

यह रोग कवक द्वारा उत्पन्न होता हैं । इससे फल की हानि ज्यादा होती है । फलों पर चौड़े धब्बे प्रकट होते हैं, रोगी स्थान कुछ धँसा हुआ होता है, नम वतावरण में रोगी स्थान से भूरे रंग का तरल निकलता है जिसमें कवक के वीजाणु होते हैं । धब्बे आपस में मिलकर फल को सड़ा देते हैं । रोग का प्रकोप अधिक होने पर फल गिर जाते हैं ।

समेंकित प्रबंधन

- **ग्रीष्म कालीन जुताई करे, रोगग्रस्त अवशेषों को एकत्रकर नष्ट कर दें ।**
- **2-3 वर्ष का फसल चक्र अपनाएं। टमाटर, मिर्च की फसल को न लगायें ।**
- **बीज शोधन कैप्टान 2 ग्राम/किग्रा बीज दर से, या कार्बेन्डाजिम या थिरम 75%WP + कार्बेन्डाजिम 50%WP(2:1) ग्राम/किग्रा. से करें। अथवा ट्राईकोडर्मा पावडर की 5-10 ग्राम/किग्रा. बीज दर से करना चाहिए ।**
- **जल निकास का उचित प्रबन्ध करें ।**
- **खेत को साफ-सुथरा रखें । रोग से बचाव हेतु स्टेकिंग (बांस की डंडियाँ लगायें) करें ।**
- **रोग अवरोधी/सहनशील प्रजाति जैसे पूसा भैरव, पूसा क्लस्टर, पन्त समाट, फ्लोरिडा मार्केट,** नरेन्द्र बैगन–1 व 2, पंजाब बरसाती, पूसा परपिल राउण्ड, पूसा कांति, पंजाब नीलम, अर्का कुस्माक **आदि उगाये ।**
- **खेत में रोग के लक्षण दिखाई देने पर क्लोरोथैलोनिल 75%WP या मैन्कोजेब 75%WP की 2.5 ग्राम प्रति ली पानी की दर से घोल बनाकर 2-3 छिड़काव करना चाहिए ।**